चंदन हो गया हूँ

किशोर काबरा

चंदन हो गया हूँ

सेतु प्रकाशन
अहमदाबाद

चंदन हो गया हूँ

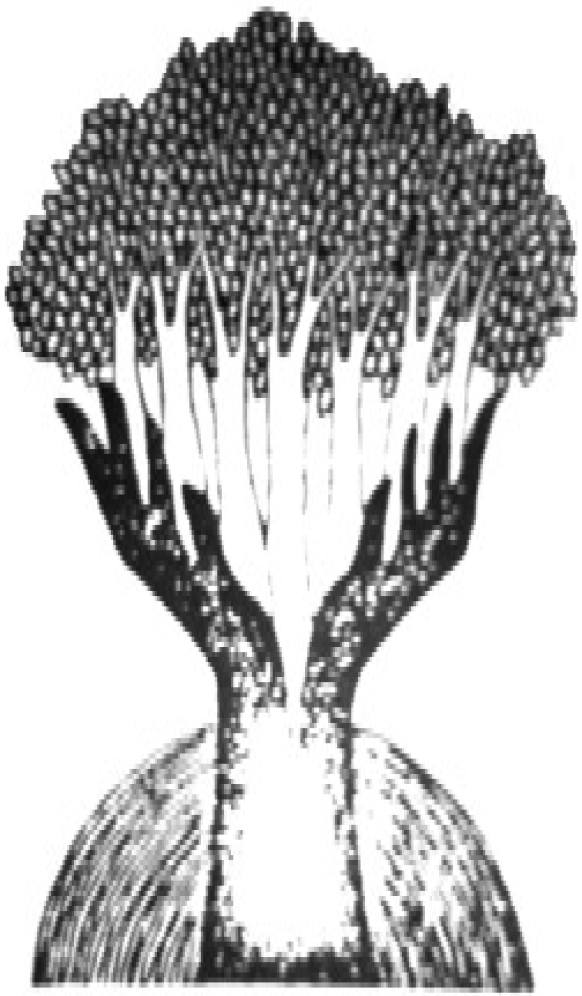

किशोर काबरा

CHANDAN HO GAYA HOON
A collection of Hindi Gazal
By KISHORE KABRA.

Pablisher : SETU PRAKASHAN, AHMEDABAD

1st Edition, 1999, Price Rs. 90/-

2nd Edition, 2018, Price Rs. 200/-

ISBN : 81-87-123-08-7

© : लेखक

प्रकाशक :

सेतु प्रकाशन
9, माधव पार्क II, वस्त्राल रोड,
वस्त्राल, अहमदाबाद-382 418.
M.–9427622862
Email : vijay.tiwari1998@gmail.com

संस्करण : द्वितीय 2018

मूल्य : 200 रुपये

मुद्रक : श्री रामानन्द ऑफसेट
अर्बुदानगर, ओढ़व, अहमदाबाद-382415.
M. : 9106936808

दो शब्द –

घिस गया इतना कि चंदन हो गया हूँ

ग़ज़ल मेरी काव्य-यात्रा में न पड़ाव की तरह रही, न मुकाम की तरह। मुक्तक से महाकाव्य तक फैले मेरे राजमार्ग से वह पगडंडी की तरह मिलती-बिछुड़ती रही, ग़ज़ाला की तरह झाँकती – दुबकती रही। मेरे संस्कारों में न वह मत्ले की तरह जमी, न मक्ते की तरह थमी; बस, कत्ए की तरह कतरा - कतरा टपकती रही। वस्तुतः चीड़ से चंदनवन बनने की मेरी अन्तर्यात्रा ही ग़ज़ल है, नीड़ से नंदनवन बनने की मेरी सर्जनयात्रा ही ग़ज़ल है। ग़ज़ल मेरे केन्द्र में नहीं, मैं ग़ज़ल के केन्द्र में हूँ और वहीं घिस-घिसकर चंदन बना हूँ।

'चंदन हो गया हूँ' में तब की ग़ज़लें भी हैं, जब मेरे बाल काले-भँवर थे और अब की ग़ज़लें भी हैं, जब मेरे बाल सफेद-झक हो गए हैं। सच तो यह है कि इन साठ ग़ज़लों में मेरी पूरी षष्टिपूर्ति है, जो मेरे होने और न होने के बीच के अंतराल को भरती है। इन ग़ज़लों में मैं पर्त-दर-पर्त खुला हूँ, पँखुरी-दर पँखुरी खिला हूँ। इनमें मेरे भोगे हुए यथार्थ और न भोगे हुए चरितार्थ के जीवित हस्ताक्षर हैं। मेरे अन्तर्बाह्य को, मेरे प्रत्यक्ष-परोक्ष को, मेरी रुचि-अरुचि को, मेरी अवस्था-व्यवस्था को, मेरे दर्शनीय-गोपनीय को इनके माध्यम से समझा जा सकता है। वक़्त के सवाल भी हैं इनमें और उनके उत्तर भी। प्रेम, पूजा और परिवेश-तीनों ही आयामों को छूने का प्रयास किया है मैंने। छू पाया हूँ या नहीं-यह आप ही छू कर बताएँ।

गज़ल ज्वालामुखी की आँख से टपके आँसुओं का काव्यावतार है। ग़ज़ल सूरजमुखी की पाँख से लिपटे पराग-कणों का छंदावतार है। ग़ज़ल ज़िंदगी का आईना है। ग़ज़ल ज़िंदादिली का मुआयना है। हर्ष-विषाद के धागों से बुनी हुई सूफ़ियाना चादर का नाम ग़ज़ल है। ग़ज़ल अरबी भाषा की कसीदा काव्य-परंपरा का विच्छेदित रूप है। दोनों का छंदगत रूप एक जैसा ही है, अर्थात्- प्रथम शेर मत्ला, जिसमें क़ाफ़िया-रदीफ़, बीच के शेर, जिनकी प्रत्येक दूसरी पंक्ति में क़ाफ़िया रदीफ़ और अन्तिम शेर मक्ते का, जिसमें कवि अपना उपनाम पिरो लेता है। ग़ज़ल का प्रत्येक शेर विचार एवं कथ्य की दृष्टि से स्वतंत्र होता है। यदि किसी ग़ज़ल में एक ही भाव के विविध चित्र हों तो उसे हमवार ग़ज़ल कहा जाता है।

'ग़ज़ल' का शाब्दिक अर्थ है – प्रेमयुक्त भाषा बोलना, प्रियतम या प्रियतमा के साथ प्रेमालाप करना। इसमें इश्के – मजाज़ी और इश्के हक़ीक़ी – दोनों को स्थान मिला है। अब वक्त की नब्ज़ को भी परखने लगी है ग़ज़ल, यही कारण है कि युगीन समस्याएँ, सामाजिक विसंगतियाँ, राजनैतिक चालबाजियाँ, आम आदमी की कुंठाएँ, वैज्ञानिक उपलब्धियों की अमानवीय परिणतियाँ आदि भी ग़ज़ल के विषय बन गए हैं।

हिन्दीवालों ने ग़ज़ल को आयातित काव्य-प्रकार माना है। यहाँ अधिकांश गीतकार ही ग़ज़लकार हैं और उन्होंने विधा के बजाय इसके काव्य-स्वरूप को मुख्यरूप से अंगीकार किया है। कुछ लोगों ने इसे प्रगीत, गीतिका, अनुगीत, मुक्तिका आदि नाम दिए हैं। जनवादी सोच और दलित कविता के नए तेवर को आत्मसात् करनेवाली विधा होने के कारण इसे तेवरी भी कहा जाता है, लेकिन नाम बदलने से क्या होता है ? ग़ज़ल तो फिर भी ग़ज़ल ही है।

हिन्दी में ग़ज़ल की परंपरा बहुत पुरानी है। यह अमीर सुखरो की गोद में पली, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के आँगन में खेली, प्रसाद-निराला की छाया में बड़ी हुई और दुष्यन्तकुमार के दरवाजे तक आकर आदमक़द खड़ी हो गई। आज तो हिन्दी-ग़ज़ल एक स्वतंत्र विधा की तरह बड़े सम्मान से जी रही है। हिन्दी ग़ज़ल के अपने हौंसले हैं, अपने सपने हैं, अपने सवाल भी हैं। पहले यह अन्तर्मुखी थी, अब बहिर्मुखी हो गई है। इतना सब होते हुए भी ग़ज़ल हिन्दी की केन्द्रीय विधा नहीं बन पाई है। ग़ज़ल में वक्तव्य, विचार और व्यंग्य का समन्वय होना चाहिए; ग़ज़ल में मुहावरेदानी, मुखरता और मनमोजीपन का मिश्रण होना चाहिए; ग़ज़ल में नफ़ासत, नज़ाकत और लताफ़त का संगम होना चाहिए। दूसरे शब्दों में कहें तो ग़ज़ल लिखते समय सूई में डोरा पिरोने जैसी तन्मयता होनी चाहिए। क्या ये सब बातें हममें हैं ?

मैं यह प्रश्न आपसे नहीं, अपने-आपसे पूछ रहा हूँ। पता नहीं, इस कसौटी पर खरा उतरूँ या नहीं, क्योंकि मैंने तो समय की शिला पर केवल आँसू और पसीने की बूँदे डालकर अपने अहं को चंदन की तरह घिसा है महाकाल के मस्तक पर सुशोभित होने के लिए। मैं देख रहा हूँ कि आप मेरी ग़ज़ल को छूकर पारस हो गए हैं और आपका पारस-स्पर्श पाते ही मैं कुंदन हो गया हूँ :

घिस गया इतना कि चंदन हो गया हूँ।
झुक गया इतना कि वंदन हो गया हूँ।
छू लिया मैंने तो पारस हो गए तुम,
छू लिया तुमने तो कुंदन हो गया हूँ।

अस्तु ! 'चंदन हो गया हूँ' ग़ज़ल–संग्रह का यह द्वितीय संस्करण पाठकों के हाथों में देते हुए हर्ष होता है। इस कृति की E-Book भी तैयार हुई है, इसी के साथ अन्य और पुस्तकें भी नेट पर उपलब्ध हैं। जिसे आप निम्न लिंक पर पढ़ सकते हैं। http://vtlib 380 188261.Word press.com

रथयात्रा **किशोर काबरा**

14 जुलाई, 2018

• • •

क्रम

भूमिका

चंदन हो गया हूँ • 9

आदमी • 11

एक ऋतु में तीन रंगों से रँगी अमराइयाँ • 12

शहर • 13

और हम ग़ज़लें परोसे जा रहे हैं • 14

चाँदी-सोने हुए आदमी • 16

जिसे अपना समझा, वह निकला पराया • 18

बुरी बात है • 20

ज़िन्दगी में शेष हैं बस, दर्द और दवाइयाँ • 21

ज़रूरी नहीं • 23

रात विधवा की बनी है चीख जैसे • 25

बबूल हुई बातें • 26

यह बात नहीं है कि कोई टेरता न हो • 27

महफ़िल में आए हुए हैं • 28

दुनिया • 30

कबूल कर लिया मैंने • 32

दीदार के लिए • 33

नीम के पत्ते • 35

भूल गया • 36

अब तुम कहाँ चले ? • 37

सीखिए • 39

रह गए • 41

सरगम हो गई • 43

प्यार की बरछी • 44

याद • 45

आँख • 46

देश • 47

तुम • 48

जवानी • 49

तिल ने कहाँ मुकाम किया ! • 51
कहीं तुम तो नहीं ? • 53
इन्सां कितने ? • 55
याद आता है • 56
क्या हाल हो चमन का ? • 58
दृष्टि मरती जा रही है • 60
क्या करूँगा व्यर्थ ही अब मुक्ति लेकर ? • 61
रहना ज़रा सँभल के • 63
वादे तुम्हारे सारे आँसू हुए मगर के • 64
होरी सब दिल्ली में खेल रहे फाग • 65
कुछ तुम्हारे रहे, कुछ हमारे रहे • 67
तिल का ताड़ कर बैठे • 69
शराब • 70
हे ख़ुदा ! • 71
मन की गाँठ • 72
दरगाह के लिए • 73
तर्जुमा न हुआ • 74
ढूँढ़ते हैं • 75
फागुन • 76
उतर आए • 78
दोनों हमारे हाथ में हैं • 79
गंदा हो गया है आदमी • 81
एक अनबूझा तराना है यहाँ • 82
दल सभी दलदल हुए हैं • 84
हमारी मौत की अफ़वाह को सच मान गए • 85
तू चिड़िया है ! • 86
तीली माचिस की • 88
पापी पार उतरते देखे • 90
मेहरबाँ हो गए • 91
बच्चों को दूध दे रही माँ घूस की तरह • 93
माटी मालव की • 94

चंदन हो गया हूँ

घिस गया इतना कि चंदन हो गया हूँ ।
झुक गया इतना कि वंदन हो गया हूँ ।

छू लिया मैंने तो पारस हो गए तुम,
छू लिया तुमने तो कुंदन हो गया हूँ ।

अर्थ, लय, तुक, तान - सारे व्यर्थ हैं अब,
गीत गलकर मात्र गुंजन हो गया हूँ ।

आदकवि की पीर ने इतना रुलाया,
क्रौंच मिटकर करुण क्रंदन हो गया हूँ ।

चार तिनकों से बने इस घोंसले में-
मुक्ति इतनी है कि बंधन हो गया हूँ ।

आँख में अंजन लगा कुछ इस तरह से,
खामियों के बीच खंजन हो गया हूँ ।

बाँसुरी में छंद को इतना पिरोया,
नंद था, अब नंदनंदन हो गया हूँ ।

आदमी

जन्म से लेकर मरण तक दौड़ता है आदमी,
दौड़ते ही दौड़ते दम तोड़ता है आदमी ।

आँख गीली, होंठ ठण्डे और दिल में आँधियाँ,
तीन मौसम एक ही संग ओढ़ता है आदमी ।

एक रोटी, दो लँगोटी, तीन गज़ कच्ची ज़मीन,
तीन चीज़ें ज़िन्दगी में जोड़ता है आदमी ।

सुबह पलना, शाम अरथी और खटिया दोपहर,
तीन लकड़ी चार दिन में तोड़ता है आदमी ।

है यहाँ विश्वास कितना आदमी का मौत पर,
मौत के हाथों सभी कुछ छोड़ता है आदमी ।

एक ऋतु में तीन रंगों से रँगी अमराइयाँ

डोलियाँ सब उठ गई हैं, बच गईं तनहाइयाँ,
तुम बजाते हो अभी तक द्वार पर शहनाइयाँ ।

मैं अँधेरे से डरा तो रोशनी में आ गया,
रोशनी में किन्तु फिर से आगई परछाइयाँ ।

कूक श्यामल, आम सोनल और हरियल पत्तियाँ,
एक ऋतु में तीन रंगों से रँगी अमराइयाँ ।

सात सागर पार करना सहज है मेरे लिए,
पर डुबोती हैं तुम्हारी आँख की गहराइयाँ ।

पौस में भी लू चली जब आँख से तुम दूर थे,
अब दिखे तो जेठ में भी चल पड़ी पुरवाइयाँ ।

शहर

जंगल सब शहर हो गए,
और शहर ज़हर हो गए ।

ख़ून बहा गलियों में ख़ूब,
रास्ते नहर हो गए ।

राम और रहीम हैं कहाँ ?
उन्हें चार प्रहर हो गए ।

दिन में ही दुबक गए लोग,
सभी शीतलहर हो गए ।

गूँगे सब ग़ज़ल बन गए,
बहरे सब बहर हो गए ।

और हम ग़ज़लें परोसे जा रहे हैं

रहबरों को रोज़ कोसे जा रहे हैं,
आप फिर किसके भरोसे जा रहे हैं ?

जा रहे हैं भीड़ के पीछे निरन्तर,
किन्तु अपना मन मसोसे जा रहे हैं ।

जो अभागे कर्म करते ही नहीं, वे-
भाग्य को दिन-रात कोसे जा रहे हैं ।

सीप के मोती सभी प्यासे पड़े हैं,
क्यारियों में शंख पोसे जा रहे हैं ।

कलम करते जा रहे हैं सर हमारे,
पगड़ियों में पंख खोसे जा रहे हैं ।

इस तरफ बच्चे तरसते रोटियों को,
उस तरफ घर में समोसे जा रहे हैं ।

पीढ़ियाँ हमसे ग़ज़ाला चाहती हैं,
और हम ग़ज़लें परोसे जा रहे हैं ।

चाँदी-सोने हुए आदमी

चाँदी-सोने हुए आदमी, जादू-टोने हुए आदमी,
तुम विराट की बात कर रहे, बौने-बौने हुए आदमी ।

जहाँ भरत-से बालक मृगराजों के दाँत गिना करते थे,
वहाँ हवा से काँप रहे हैं ये मृगछौने हुए आदमी ।

संसद की कुर्सी पर बैठे कुत्तों के मानिंद लड़ेंगे,
कुरुक्षेत्र में शंख बजा तो घर के कोने हुए आदमी ।

धनवानों के मुंडन में जो बिन न्यौते ही पहुँच रहे हैं,
वे गरीब की शादी में होने-अनहोने हुए आदमी ।

बेटे के पालन - पोषण में अपना सब कुछ दे डालेंगे,
बिटिया की जब बात चले तो ओने-पौने हुए आदमी ।

लगे गाँठ का गोपीचंदन, किया वहाँ से अलख-निरंजन,
किन्तु मुफ़्त का माल मिले तो पत्तल-दोने हुए आदमी ।

ख़ून सभी का बर्फ़ हो गया, आँसू सबके पानी - पानी,
और पसीना हवा हुआ, क्या आज अलोने हुए आदमी !

जिसे अपना समझा, वह निकला पराया

बड़ी देर की, पर बड़ा राज़ पाया,
जिसे अपना समझा, वह निकला पराया ।

मुझे दुश्मनों की नहीं थी ज़रूरत,
यही फ़र्ज कुछ दोस्तों ने निभाया ।

पिता ने वसूली थी बचपन की कीमत,
ये बेटा बुढ़ापे का लेगा किराया ।

उधर गुरु ने पकड़ी है चेले की उँगली,
इधर शिष्य गुरु से भी निकला सवाया ।

सफ़ाई के खातिर रखा जिसको नौकर,
उसी ने किया मेरे घर का सफाया ।

बचाया था हर मोड़ पर जिसको मैंने,
उसी ने सरेआम मुझको नचाया ।

महानाश आया, या मधुमास आया,
सभी को मुझे लूटना रास आया ।

बुरी बात है

प्यार करके छिपाना बुरी बात है,
किन्तु कहके दिखाना बुरी बात है ।

दिल किसी का चुराना ख़ता हो, न हो,
किन्तु आँखें चुराना बुरी बात है ।

रेत पर घर बनाना सही हो न हो,
घर बनाकर ढहाना बुरी बात है ।

तुम सियासत के हो, खूब वादे करो,
किन्तु वादे निभाना बुरी बात है ।

ज़िन्दगी के दुःखों पर हँसो तुम भले,
मौत पर मुस्कराना बुरी बात है ।

ज़िन्दगी में शेष हैं बस, दर्द और दवाइयाँ

चेहरे पर उड़ रही हैं राख और हवाइयाँ,
ज़िन्दगी में शेष हैं बस, दर्द और दवाइयाँ ।

पाँव लटकाए हुए हैं कब्र में कब से मगर-
जन्म-दिन पर ले रहे हैं भेट और बधाइयाँ ।

कर रहे मुँह पर बढ़ाई, चापलूसी दोस्त की,
पीठ पीछे कर रहे अपमान और बुराइयाँ ।

रेवड़ी-से बँट रहे हथियार दुनिया में अगर,
बंद कैसे हो सकेगी जंग और लड़ाइयाँ ?

अब रहें तैयार हरदम चीन - अमरीका यहाँ,
रूस की तो खुल चुकी हैं पोल और कलाइयाँ।

टूटते परिवार को कैसे बचाएँ हम भला ?
व्यर्थ होती जा रही हैं शर्म और सगाइयाँ ।

कब छलक जाए, किसी को है नहीं इसका पता,
सब्र की सब भर गई हैं झील और तलाइयाँ ।

ज़रूरी नहीं

हर चिड़ी का चहकना ज़रूरी नहीं।
हर कली का महकना ज़रूरी नहीं।

ग़म भुलाने को पीनी पड़े मय भले,
किन्तु पीकर बहकना ज़रूरी नहीं।

पाँव में बाँधकर तुम नचालो मुझे,
घुँघरुओं का छनकना ज़रूरी नहीं।

जिसके अन्तर की खिड़की सहज खुल गई,
उसका दर - दर भटकना ज़रूरी नहीं।

मौन आँखों की भाषा अगर सुन सके,
चूड़ियों का खनकना ज़रूरी नहीं।

आँख से अश्रु चाहे बहाओ, मगर-
आह भरकर सिसकना ज़रूरी नहीं ।

जन्म लेना औ' मरना ज़रूरी यहाँ,
पर पुनः देह धरना ज़रूरी नहीं ।

रात विधवा की बनी है चीख जैसे

ज़िन्दगी अब हो गई है भीख जैसे ।
लोग चूसे जा रहे हैं ईख जैसे ।

दिन समूचा शोरगुल है पागलों का,
रात विधवा की बनी है चीख जैसे ।

तुम अचानक चौंककर भागे स्वयं से,
प्रेत दर्पण में गया हो दीख जैसे ।

आचरण महँगा हुआ है आदमी का,
और सस्ती हो गई है सीख जैसे ।

कौन बालों से यहाँ जूएँ निकाले ?
अब लटों में पड़ गई हैं लीख जैसे ।

बबूल हुईं बातें

सब शूल हुई बातें, सब धूल हुईं बातें ।
जो आम थीं, वे बेर और बबूल हुईं बातें ।

पत्थर पै सिर पटककर पथरा गए थे हम जब,
तब जाके मेरे यार सब कबूल हुई बातें ।

जब तक रगों में खूँ था, कानून जेब में था,
अब थक गए तो वे ही उसूल हुईं बातें ।

जब तक रहा था मतलब, बातें बड़ी थीं गहरी,
अब काम बन गया तो सब फ़िज़ूल हुईं बातें ।

क्या है हमारा कहना, क्या है तुम्हारा सुनना,
जब आँख मिल गई तो बस वसूल हुईं बातें ।

यह बात नहीं है कि कोई टेरता न हो !

है कौन जो सुख-दुःख के खेल खेलता न हो ?
साँसों का भार आँसुओं पै झेलता न हो ?

तुम छिप के देखते हो मेरा उनको देखना,
फिर देखते हो, तुमको कोई देखता न हो ।

अभिमन्यु भला कौन-सा कुरुक्षेत्र में ऐसा,
अपनों का चक्रव्यूह जिसे घेरता न हो ?

तुम सुन नहीं पाते तो अलग बात है, लेकिन-
यह बात नहीं है कि कोई टेरता न हो !

मन को डुबो ले अश्रु में तो स्वर्ग पा सके !
वह फिर भले मनकों की माला फेरता न हो ।

महफ़िल में आए हुए हैं

रुख से परदा हटाकर तो देखो, किसलिए हम बुलाए गए हैं ?
नाम लेती थीं जिनका हमेशा, वे आज महफ़िल में आए हुए हैं।

स्याह गेसू में नागिन छिपा लो, सुर्ख होंठों पै शबनम बिछा लो,
हम भी अपनी शराबी निगाहें मयकदे में बिछाए हुए हैं ।

आज आँखों में काजल बसालो, दिल के घावों को फिर से सजा लो,
ये सभी मौलवी औ' पुजारी आज मरहम लगाए हुए हैं ।

जाम खाली किए जा, किए जा, मय के सागर में डुबकी लिए जा,
मयकदे में सभी आज तुझ पर अपनी आँखें लगाए हुए हैं ।

इस तरफ़ तुम छिपी मय के अंदर उस तरफ तुममें मय का समंदर,
मय पिएँ या तुझे देखें साक़ी, रिंद सारे घबराए हुए हैं ।

सुर्ख गालों पै सूरज हँसा है, गर्म बाहों में जन्नत बसा है,
इस कमर के किनारे - किनारे बाग़ किसके लगाए हुए हैं ?

आशिक़ी में बड़ी चोट खाकर, आए दुनिया से हम मुँह छिपाकर,
दर पै तेरे मिलेगा सहारा, आस कबसे लगाए हुए हैं ।

पास आओ तो भर देंगे सारा, सुर्ख फूलों से दामन तुम्हारा,
शर्म हमसे करोगी कहाँ तक, तुमको दुल्हन बनाए हुए हैं ।

दुनिया

ख़ुद हँसती-मुस्काती दुनिया ।
हमको रोज़ रुलाती दुनिया ।

पहले थोड़ी खुशियाँ देती,
फिर आँसू ढुलकाती दुनिया ।

रो-रोकर देती है थोड़ा
हँसकर सब ले जाती दुनिया ।

अन्तिम क्षण तक नहीं छोड़ती,
मरघट तक पहुँचाती दुनिया ।

भोगी से बतियाती रहती,
त्यागी से घबराती दुनिया ।

मिट्टी से जुड़नेवाले को
फाँसी पर लटकाती दुनिया ।

पद-पैसे का लालच देकर
दुनिया को भरमाती दुनिया ।

सच्चे को कोड़े लगवाती,
झूठे को पुजवाती दुनिया ।

क़बूल कर लिया मैंने

सुनो, गुलाब को बबूल कर लिया मैंने ।
सफेद झूठ को उसूल कर लिया मैंने ।

भरी अदालतों में सिर्फ सच कहा, लेकिन-
गुनाह को वहाँ क़बूल कर लिया मैंने ।

पिलाके दूध आस्तीं में छिपे साँपों को,
भरोसा उन पै क्या फ़िजूल कर लिया मैंने !

समय की डालियों से नोच नहीं पाओगे,
कि फूल को यहाँ त्रिशूल कर लिया मैंने ।

फँसाएगा भला तू जाल में कैसे मुझको,
तेरे रक़ीब को रसूल कर लिया मैंने ।

दीदार के लिए

तुम बहाना ढूँढ़ते अवतार के लिए,
हम यहाँ बैठे हुए उद्धार के लिए ।

भूमिका में कब तलक उलझे रहें यहाँ,
सब यहाँ आए हैं उपसंहार के लिए ।

क्या रुके मेहमान तेरे पास में भला,
शब्द दो भी हैं नहीं मनुहार के लिए ।

कुछ दिखादे झलक मेरे यार, तू हमें,
द्वार पर कबसे खड़े दीदार के लिए ।

आपने क्या प्यार को अंजाम दिया है,
जी रहे हैं सब यहाँ तकरार के लिए ।

जी सके करतार के ख़ातिर भला कभी ?
मर रहे हर पल यहाँ संसार के लिए ।

ज़िन्दगी दुत्कारती चाहे रही तुम्हें,
मौत आई सामने सत्कार के लिए ।

नीम के पत्ते

पुराने छंद बनकर जा रहे हैं नीम के पत्ते !
नए अनुबंध बनकर आ रहे हैं नीम के पत्ते ।

गए थे गाँव में संदेस देने एक बिरहन को
तभी से काग बनकर गा रहे हैं नीम के पत्ते ।

इधर ये पाँख बनकर झर रहे बेहोश पंछी के,
उधर वे आँख बन मुस्का रहे हैं नीम के पत्ते ।

हवा के साथ आँगन बीच करवत हाथ में लेकर
समय को काटते ही जा रहे हैं नीम के पत्ते ।

भूल गया

चमन के ख़ुशनुमा पहलू में रुकना भूल गया,
खड़ा था इस तरह बुत-सा कि झुकना भूल गया ।

कली के गाल पर यह तिल कहाँ से उग आया?
बड़ा मग़रूर है भँवरा कि उड़ना भूल गया ।

गुलाबी आँख के दरपन में सूरत क्या उभरी,
भरी बहार में गुलशन सँवरना भूल गया ।

सिखा गए हैं इशारे वे इस तरह मुझको,
खुली किताब का मजमून पढ़ना भूल गया ।

अँधेरी रात में चमकी शमा दरिंदे-सी,
परिंदा शाख से नीचे उतरना भूल गया ।

अब तुम कहाँ चले

सपनों की गली पार कर अब तुम कहाँ चले ?
आँसू को तार-तार कर अब तुम कहाँ चले ?

दिल को जला के प्यार ने काजल बना दिया,
आँखों में उसे सार कर अब तुम कहाँ चले ?

तुमने किया था कौल–हम बैठेंगे उम्रभर,
पहला ही दाँव हार कर अब तुम कहाँ चले ?

कबसे खड़े हैं द्वार पर दरपन लिए हुए,
आँचल ज़रा सँवार कर अब तुम कहाँ चले ?

खिड़की के पास उड़ रही यादों की धूल ये,
आँगन ज़रा बुहार कर अब तुम कहाँ चले ?

कहते थे-साथ जाएँगे दरिया के पार हम,
जल में हमें उतार कर अब तुम कहाँ चले ?

महफ़िल में सभी आगए हैं ग़म लिए अपना,
सरगम ज़रा उभारकर अब तुम कहाँ चले ?

सीखिए

कलम को तलवार करना सीखिए !
शब्द से संहार करना सीखिए !

अतिथि का सत्कार ही काफ़ी नहीं
हृदय से मनुहार करना सीखिए ।

प्यार का दीदार करना चाहते ?
प्यार का इज़हार करना सीखिए !

खेत में आते भला बादल कहाँ ?
रेत में ही वे बरसते रह गए ।

सिलवटों को देखकर हम सेज की
रातभर करवट बदलते रह गए ।

रह गए

गेसुओं-से तुम सँवरते रह गए ।
आँसुओं से हम बिखरते रह गए ।

इस अदा से 'आवजो' तुमने कहा,
सीढ़ियों से हम उतरते रह गए ।

नज़र का अंदाज तो देखा नहीं,
लोग नज़रंदाज करते रह गए ।

आँख से जब भी किया हमने सवाल
दाँत से तुम नख कुतरते रह गए ।

ताड़कर सब, चढ़ गए तुम ताड़ पर,
और हम तिल में उलझते रह गए ।

खेत में आते भला बादल कहाँ ?
रेत में ही वे बरसते रह गए ।

सिलवटों को देखकर हम सेज की
रातभर करवट बदलते रह गए ।

सरगम हो गई

छू लिया तुमने तो मेरी आँख पुरनम हो गई ।
आँसुओं के साथ पूरी रात शबनम हो गई ।

खुशबुओं का एक झोंका चमन से ज्योंही बहा,
पत्तियाँ लहरा गईं, हर डाल परचम हो गई ।

गीत को भरकर ग़ज़ल में पी गया हूँ इस तरह,
होंठ से निकली हुई हर बात सरगम हो गई ।

सात डग ही तो भरे थे साथ में लेकर तुम्हें,
किन्तु हरदम के लिए यह राह हमदम हो गई ।

घाव पर ही लग रहे थे घाव मेरे इस तरह,
ख़ून की हर बूँद अपने - आप मरहम हो गई ।

प्यार की बरछी

जिगर में प्यार की बरछी तुम्हीं ने बोई है,
अँधेरी रात में क्यों चाँदनी पिरोई है ?

तुम्हारे पास अब मोती कहाँ से आएँगे ?
हृदय की सीप आँख बंद किए सोई है ।

हरी ज़मीं पै अछूती रही है शबनम भी,
सुना है, रात बड़ी देर तलक रोई है ।

पसीना चाँद के मुँह पर कहाँ से उग आया ?
कोई उछाल समंदर के बीच खोई है ।

नहीं बजेगी आज बाँस की बँसुरिया भी,
लबों के सब सुराख बंद किए कोई है ।

याद

हमारी याद इधर भार-भार ढोती थी,
तुम्हारी याद उधर डार-डार सोती थी ।

सुना है चाँद ने कुछ खा के ख़ुदकुशी कर ली,
बड़े सवेरे ओस जार-जार रोती थी ।

उड़ा - उड़ा सा रंग आज क्यों हैं पूरब का ?
हवा लहू के दाग़ बार-बार धोती थी ।

फसल जमेगी आँख में कहाँ से आँसू की ?
लुटाती आठ-आठ, चार-चार बोती थी ।

भला किया जो बिजलियों के तार ले आए,
बदलियों की लाज तार-तार होती थी ।

आँख

याद आँखें आ रही हैं, क्या करें ?
बेवफ़ा तरसा रही हैं, क्या करें ?

पी गई सारा समंदर प्यार का,
अश्क दो बरसा रही हैं, क्या करें ?

चाक सीना इस ज़मीं का कर दिया,
और अब हरषा रही हैं, क्या करें ?

रात भर सोती रहीं करवट बदल,
और अब शरमा रही हैं, क्या करें ?

कल किरण के साथ ही मर हम गए,
आज मरहम ला रही हैं, क्या करें ?

देश

देश की अच्छी हिफ़ाज़त कर रहे हो,
खेत विधवा का समझ कर चर रहे हो!

जो पराए थे, किया उनने यही सब,
तुम हमारे हो; अरे क्या कर रहे हो ?

हाथ दोनों जोड़कर कल भटकते थे,
आज दोनों हाथ से घर भर रहे हो !

झोंपड़ी के नाम सूखा लिख दिया है,
महल पर बरसात बनकर झर रहे हो !

सिंह सोया है जगा दूँ तुम कहो तो,
मौत कुत्ते की अरे, क्यों मर रहे हो ?

तुम

हम तो समझे थे, केवल हमारी हो तुम,
क्या पता था कि अब तक कुँआरी हो तुम !

झाँकते रह गए प्यालियों में तुम्हें,
पूरे सागर की लेकिन ख़ूमारी हो तुम !

म्यान में जो बसे चैन से, वह नहीं,
पेट में जो धँसे, वह कटारी हो तुम !

एक घर में तुम्हें कैद कैसे करें,
पूरी बस्ती की मर्दुमशुमारी हो तुम !

धूप के पाँव-सी, दर्द के गाँव-सी,
तुम किसी की नहीं हो, तुम्हारी हो तुम !

जवानी

जवानी सुनहरी फ़सल हो गई है,
कुँआरी थी, खिलकर कमल हो गई है ।

जिए थे अभी तक निरे ख़्वाब में, पर-
मुहब्बत हमारी असल हो गई है ।

परस क्या मिला है तुम्हारे लबों का,
ये मिट्टी हमारी महल हो गई है ।

बदलते रहे आज तक पहलुओं को,
है किस्मत कि जल्दी पहल हो गई है ।

सितारों के नीचे अमलतास जैसी
वे बातें हमारी अमल हो गई हैं ।

जो पथरा गई थीं, पहाड़ों पै आँखें,
तराई में आकर तरल हो गई हैं ।

नुकीले कलम की निगोड़ी सियाही,
ग़ज़ाला थी कल, अब ग़ज़ल हो गई हैं।

तिल ने कहाँ मुकाम किया ?

तुम्हारे शोख़ इशारों ने बड़ा नाम किया,
सभी के सामने इस दिल का काम तमाम किया ।

लबों के देखकर जलते हुए किनारों को
छलकते जाम ने झुकते हुए सलाम किया ।

फिसल गए हैं अश्क इन गुलाबी गालों पर,
सभी हैरान हैं, तिल ने कहाँ मुक़ाम किया !

तुम्हारे वक्ष में जबसे उभार आया है,
नज़र के पाँव ने इस गाँव को बदनाम किया ।

वज़न है दोनों तरफ जिस्म के बराबर ही,
कमर ने ठीक तराजू का यहाँ काम किया ।

कहीं न ठाँव मिली उम्र को, तो क्या करती ?
तुम्हारी छाँव में आकर तनिक विराम किया ।

छिपाके राज़ेहुस्न बैठ गए थे, लेकिन-
'किशोर' ने उसे महफ़िल में सरेआम किया ।

कहीं तुम तो नहीं

यह रूप की सौगात कहीं तुम तो नहीं ?
यह रेशमी बरसात कहीं तुम तो नहीं ?

फिसल रहा है चाँद गेसुओं के साए में,
यह ओस भरी रात कहीं तुम तो नहीं ?

कभी से रो रही शहनाइयाँ दुवारे पर,
यह लौटती बारात कहीं तुम तो नहीं ?

सभी को बाँट रही दिल हमारे कूचे में,
यह जिस्म की ख़ैरात कहीं तुम तो नहीं ?

बड़े दिनों के बाद होंठ हिले सपनों के,
यह राज़ भरी बात कहीं तुम तो नहीं ?

हमारी पहली चाल ख़त्म भी न हो पाई,
यह शह और ये मात कहीं तुम तो नहीं?

जला रहा है महावर किसी के पैरों को,
यह सौतिया जज़्बात कहीं तुम तो नहीं ?

इन्सां कितने ?

दिलों का दर्द पहचाने वे हैं, इन्सां कितने ?
जिगर में दफ़्न सिसकते हुए अरमां कितने ?

चले गए वे हमें दे के जुदाई की चुभन,
जवानी के महकते दिन हुए महमां कितने ?

दवाएँ और दुवाएँ सभी बेकार हुईं,
ख़ुदा तक पहुँच हो - ऐसे रहे उल्मां कितने ?

अरे, फ़रियाद अब किसकी करे फ़रहाद यहाँ ?
निकल चुके हैं ज़माने के तो फ़रमां कितने ?

बड़ा ही अच्छा हुआ, आगए इस मौके पर,
मेरे कंधों पै तुम्हारे रहे अहसां कितने ?

याद आता है

उषा में योगिनी का रूप - सर्जन याद आता है,
निशा में उफ़, वियोगन का विसर्जन याद आता है ।

अँधेरी रात में जब चाँदनी छत पर उतरती है,
मुझे टूटा हुआ गुमनाम दर्पण याद आता है ।

बिना बरसात जब बदली बरसती है अकेले में,
मुझे विधवा वधू का अश्रु-तर्पण याद आता है ।

किसी घनश्याम में बिजली चमककर लुप्त होती है,
मुझे एकान्त राधा का समर्पण याद आता है ।

बिछड़ते दो दिलों को सहज ही जिसने मिलाया था,
बरसती रात का वह मेघ-गर्जन याद आता है ।

किनारे पर समंदर के लहर जब सिर पटकती है,
मुझे आशा-निराशा का विवर्तन याद आता है ।

लुटी-सी, काँपती-सी श्लथ लता तरु से फिसलती है,
मुझे तब वासनाओं का विकर्षण याद आता है ।

क्या हाल हो चमन का ?

निंदिया अगर न आए, क्या हाल हो सपन का ?
सपना अगर न आए, क्या हाल हो तपन का ?

पत्थर की आँख से ही नम हो गई है शबनम,
गर फूल रो पड़े तो क्या हाल हो चमन का ?

सुर उठ रहे हैं ऊँचे शहनाइयों के नीचे,
डोली न उठ सकी तो क्या हाल हो दुल्हन का ?

बिरहन की आँख भारी, सौतन के पाँव भारी,
उस पर जले जहाँ तो क्या हाल हो जलन का ?

घूँघट ज़रा उठाए, पलकें ज़रा झुकाए,
फिर रूठ जाए सजनी, क्या हाल हो सजन का ?

बदरा गई हों बतियाँ, कजरा गई हों रतियाँ
गंगा भी साँवली तो क्या हाल हो जमन का ?

शासक गिरे हुए हों, जनता मरी हुई हो,
खूँखार हो पड़ोसी, क्या हाल हो वतन का ?

दृष्टि मरती जा रही है

मार्गदर्शक बच गए हैं, दृष्टि मरती जा रही है,
सर्जनाएँ जी रहीं, पर सृष्टि मरती जा रही है ।

चूस ली धरती, निचोड़े जा रहे तुम बादलों को,
वृक्ष कितने भी लगाओ, वृष्टि मरती जा रही है ।

जन्म दर औ' मृत्यु दर का हो गया ऐसा गणित कुछ,
आयु बढ़ती जा रही, पर पुष्टि मरती जा रही है ।

ज्ञान औ' विज्ञान का जल पी लिया भर पेट लेकिन,
जी रही तृष्णा सभी की, तुष्टि मरती जा रही है ।

वासना की आग में होली बने तन-मन सभी के,
व्यष्टि के ही साथ हाय, समष्टि मरती जा रही है ।

क्या करूँगा व्यर्थ ही अब मुक्ति लेकर ?

हो गया जब तृप्त निष्छल भक्ति लेकर,
क्या करूँगा व्यर्थ ही अब मुक्ति लेकर ?

बहुत श्रम करके उठा हूँ पंक में से,
गिर पड़ूँगा फिर तुम्हारी युक्ति लेकर ।

मिल गए मोती मुझे तो आँख में ही,
क्या करूँगा शंख लेकर, शुक्ति लेकर ?

शब्द का आकार किस-किस अश्रु को दूँ ?
सब यहाँ घेरे खड़े अभिव्यक्ति लेकर ।

स्वयं के बल पर हमेशा जो जिया है,
वह नहीं जीता पराई शक्ति लेकर ।

मैं सभी को छोड़कर अब जा रहा हूँ
तुम खड़े हो व्यर्थ ही अनुरक्ति लेकर ।

ढेर पहले ही लगा है उक्तियों का,
और तुम फिर आ गए अत्युक्ति लेकर ।

रहना ज़रा सँभल के

तूफ़ान है, भँवर है, रहना ज़रा सँभल के,
कश्ती को तुम बढ़ाना माझी बदल-बदल के ।

लगता है, बात मेरी भीतर पहुँच गई है,
आँखों से अश्रु आया बाहर उछल-उछल के ।

तिल का सहारा देकर दिल को तुम्ही सँभालो,
नज़रों ने रख दिया है उसको कुचल-कुचल के !

दिल दे चुके हैं उनको जो सामने खड़े थे,
तुम माँग लेते पहले हम से ज़रा मचल के ।

जितनी तुम्हारी खिड़की, उससे बड़ी है दुनिया,
झाँका कभी स्वयं से बाहर ज़रा निकल के ?

वादे तुम्हारे सारे आँसू हुए मगर के

बदले भला कहाँ से हालात इस शहर के ?
वादे तुम्हारे सारे आँसू हुए मगर के ।

ऐसी पड़ी डकैती, चौपट हुई है खेती,
केवल बची है रेती पेंदी में इस नहर के ।

घी-दूध आसमाँ पर, पानी गया रसातल,
बस, सामने हमारे प्याले बचे ज़हर के ।

सब जल गए हैं पत्ते, फल-फूल बिक चुके हैं,
मौसम भला करे क्या इस बाग में ठहर के ?

तूफ़ान क्या उठा बस, ज्वालामुखी फटा है,
संकेत हो रहे हैं सब आखरी प्रहर के ।

होरी सब दिल्ली में खेल रहे फाग

बुझी पड़ी धनिया के चूल्हे की आग,
होरी सब दिल्ली में खेल रहे फाग ।

ठौर-ठौर सूखा है, बंजर हैं खेत,
संसद ने काग़ज़ पर बोए हैं बाग ।

निमिया भयभीत और अम्बुवा बीमार,
बिरहिन की चौखट पर बैठा है काग ।

कब तक अब धोए माँ बेटी की लाज ?
गलियों में रोज नए लगते हैं दाग़ ।

पढ़-लिख कर शहर गया गाँव का किसान,
मेरे इस भारत के फूट गए भाग ।

गूँगा है देश और बहरा है तंत्र,
बंद आँख शायर आलाप रहे राग ।

सिरहाने महँगाई, पैताने रोग,
छाती पर भूख खड़ी, अब तो तू जाग ।

कुछ तुम्हारे रहे, कुछ हमारे रहे

उम्रभर बिजलियों के सहारे रहे,
मेरी आँखों के बादल कुँवारे रहे ।

नाव जाती रही सब मुसाफ़िर लिए,
और माँझी सभी इस किनारे रहे ।

यार, रहने भी दो अब पुराने हिसाब !
कुछ तुम्हारे रहे, कुछ हमारे रहे ।

खेत में प्यास दम तोड़ती थी उधर,
रेत में व्यर्थ बहते पनारे रहे ।

हम इधर राह तकते रहे रातभर,
तुम उधर सेज अपनी सँवारे रहे ।

हम कहाँ से समझते जबाँ इश्क की ?
सब तुम्हारे किताबी इशारे रहे ।

उगता सूरज मुकद्दर में है ही कहाँ ?
अपनी किस्मत में ढलते सितारे रहे ।

तिल का ताड़ कर बैठे

ज़रा-सी बात थी, तुम किन्तु तिल का ताड़ कर बैठे,
नदी के बीच रातोंरात एक पहाड़ कर बैठे ।

तुम्हारा काम था तब घिस रहे थे नाक चौखट पर,
हमारा नाम सुनकर अब कँटीली आड़ कर बैठे ।

हमारी लूट ली इज्जत, हमारी चूँट ली काया,
सड़क के बीच फिर कपड़े स्वयं के फाड़कर बैठे ।

अरे, तुम चाहते थे आज की ताज़ा ख़बर बनना,
इसी के वास्ते ख़ुद को कबर में गाड़कर बैठे ।

तुम्हारी आँख पर ऐसा भरम का पड़ गया परदा,
जिसे मारा था कल तुमने, उसी को लाड़ कर बैठे।

शराब

काजल में नहीं और नहीं तिल में है शराब ।
आशिक़ की पसलियों में छिपे दिल में है शराब ।

अंगूर के साये में कहाँ ढूँढ़ रहा तू ?
वह देख, मेरे यार की महफ़िल में है शराब ।

प्यालों को छोड़ रिंद तो साक़ी को पी गए,
अब कौन कहे उनसे कि बोतल में है शराब ।

पीते हैं शाम को सुबह में कोसते हैं जो,
उन दोगलों की ओर से मुश्किल में है शराब ।

गीता, कुरान बाइबल, इंजिल को छोड़ तू !
ले चल, मेरे महबूब की मंज़िल में है शराब ।

ऐ ख़ुदा !

मौत के पहले तू आना ऐ ख़ुदा !
लोरियाँ गाकर सुलाना ऐ ख़ुदा !

आग में मुझको जलाना तू भले,
दाग़ मुझ पर मत लगाना ऐ ख़ुदा !

अगर काँटों पर चलाना है मुझे,
पाँव में मेहँदी लगाना ऐ ख़ुदा !

बाँध दें अरथी हमारे लोग जब,
काँध दे मुझको उठाना ऐ ख़ुदा !

ग़र ज़रूरत आ पड़े मेरी यहाँ,
तो मुझे फिर से बुलाना ऐ ख़ुदा !

मन की गाँठ

मन की गाँठ नहीं खुलती है गुरुडम के गलियारे में,
उसे खोलना है तो आओ अंतर के उजियारे में ।

तीन गुणों को साँप समझकर अब तक भाग रहे थे तुम,
दीपक एक जलाया होता चेतन के चौबारे में ।

माया के परदे में छिपकर सबको नाच नचाता जो,
नहीं मिलेगा वह मन्दिर में, मस्जिद में, गुरुद्वारे में ।

हीरे, मोती, जरतारे में नहीं लगेगा मन मेरा,
वह तो भैया, डूब गया है मीरा के इकतारे में ।

जीवन डूब रहा पश्चिम में, मौत झाँकती पूरब से,
कब तक सोया पड़ा रहेगा मूरख, इस भिनसारे में ?

दरगाह के लिए

वे मर गए हैं देश की परवाह के लिए,
तुम जी रहे हो स्वयं के निर्वाह के लिए ।

इनके महल की सीढ़ियाँ चंदन की बन गईं,
अब काठ का टुकड़ा नहीं शवदाह के लिए ।

बहरा गई बहर, ग़ज़ल गलीच हो गई,
कोई बचा नहीं यहाँ इसलाह के लिए ।

मंज़िल नहीं हमदम नहीं, हमराज भी नहीं,
पैरों के निशां रह गए हमराह के लिए ।

दारा गए, दाता गए, दाऊद भी गए,
दरवेश ही बचे हैं बस, दरगाह के लिए ।

तर्जुमाँ न हुआ

तुम्हारी अक्लमंदी पर मुझे गुमाँ न हुआ ।
लिखा था उस जबाँ में ख़त कि तर्जुमाँ न हुआ ।

अकेले चल रहे थे ज़िन्दगी की राहों पर,
हमारा इस जहाँ में कोई रहनुमा न हुआ ।

तुम्हारा साथ मैंने दूर तक निभाया है,
बदनुमा ही सही, पर में बदगुमाँ न हुआ ।

तुम्हारी रात अकेली न ख़ुशगवार हुई,
हमारा दिन भी अकेला था, ख़ुशनुमा न हुआ ।

ख़ुदा की मेहरबानियों की बात मत पूछो,
हज़ार पर थे, मगर एक आसमाँ न हुआ ।

ढूँढ़ते हैं

तुझे ज़िन्दगी, दर-ब-दर ढूँढ़ते हैं,
सियाही के भीतर सहर ढूँढ़ते हैं ।

न हैं मयकदे अब, न है मयकशी भी,
ये साक़ी सभी अब ज़हर ढूँढ़ते हैं ।

बमों ने शहर को जहन्नुम बनाया,
जहन्नुम में फिर से शहर ढूँढ़ते हैं ।

बिछाकर सभी ओर बारूद हम अब,
बहाना-ए-ख़ूनी क़हर ढूँढ़ते हैं ।

वे नादाँ हैं जो इस भरी दोपहर में-
सुबह के सलोने पहर ढूँढ़ते हैं ।

फागुन

प्रेम-पत्र की तरह झर रहे झर-झर पत्ते फागुन में ।
नंगे पैरों लू पहुँचाती घर-घर पत्ते फागुन में ।

किरणों के पंजों को खोले ज्योंही लपका सूरज-बाघ,
मृगछौनों से काँप रहे हैं थर-थर पत्ते फागुन में ।

गोदी में से उतर-उतरकर चुपके-चुपके शिशु जैसे,
घुटनों के बल सरक रहे हैं सर-सर पत्ते फागुन में ।

नीम और गुड़हल गुलाब की करवत लेकर हाथों में,
दोपहरी को काट रहे हैं खर-खर पत्ते फागुन में ।

कल बसन्त की यहाँ सवारी धूमधाम से निकलेगी,
इसी ख़ुशी में ध्वज फहराते फर-फर पत्ते फागुन में ।

धूल भरे अंधड़ की झोली कंधे पर लटका कर लो,
भिखमंगों-से घूम रहे हैं दर-दर पत्ते फागुन में ।

पतझर हुआ परास्त, शवों के ढेर लगे हैं चारों ओर,
अपनी अरथी आप उठाते जर्जर पत्ते फागुन में ।

उतर आए

मुझे ज़र्रा समझ पहले हिक़ारत पर उतर आए,
उठा जब आसमाँ पै तो इबादत पर उतर आए ।

पसीना, ख़ून, आँसू, दूध-सब कुछ ले लिया हमसे,
कि जल की बूँद माँगी तो तिजारत पर उतर आए ।

तुम्हारे वास्ते सिर काट सिरहाना बनाया, पर-
'ये तकिया गड़ रहा'-तुम इस शिक़ायत पर उतर आए ।

जवानी होम दी जिनके भरण में और पोषण में,
वही बेटे बुढ़ापे में बग़ावत पर उतर आए ।

भरोसा था कि आख़िर में मुझे माफ़ी मिलेगी ही,
मगर मेरे ख़ुदा, तुम भी अदालत पर उतर आए ।

दोनों हमारे हाथ में हैं

तरण या तारण बनें - दोनों हमारे हाथ में हैं ।
मरण या मारण बनें - दोनों हमारे हाथ में हैं ।

त्याग ने जग को जगाया, भोग ने जग को रुलाया,
राम या रावण बनें - दोनों हमारे हाथ में हैं ।

एक में जड़ता छिपी है, एक में चपला छिपी है,
शीत या सावन बने - दोनों हमारे हाथ में हैं ।

कष्ट देना बात है कुछ, कष्ट सहना बात है कुछ,
छेद या छाजन बनें - दोनों हमारे हाथ में हैं ।

फल मिलेगा या नहीं-यह सब नियति के हाथ में, पर-
कर्म या कारण बनें - दोनों हमारे हाथ में हैं ।

कर्म भी है, भक्ति भी है, ज्ञान औ' वैराग्य भी हैं,
साध्य या साधन बनें - दोनों हमारे हाथ में हैं ।

प्रेम, ममता, स्नेह भी हैं, मोह, माया, वासना भी,
पतित या पावन बनें - दोनों हमारे हाथ में हैं ।

एक देने में लगा है, एक लेने में जुटा है,
साज या साजन बनें - दोनों हमारे हाथ में हैं ।

एक में बदबू भरी है, एक में ख़ुशबू छिपी है,
कीच या कानन बनें - दोनों हमारे हाथ में हैं ।

गंदा हो गया है आदमी

कफ़न–लकड़ी का पुलिन्दा हो गया है आदमी ।
मरघटों के बीच ज़िंदा हो गया है आदमी ।

ख़ून पीता है, जो पीता था कभी आबे - हयात,
देवता था, अब दरिंदा हो गया है आदमी ।

शाह को भी शरण दी थी एक भामाशाह ने,
आज दर-दर भीख-चंदा हो गया है आदमी ।

पाप करके हाथ धो लो, लोग बोलेंगे यही-
लो, ख़ुदा का नेक बंदा हो गया है आदमी ।

राजनैतिक चालबाज़ी और भ्रष्टाचार की-
गन्दगी से और गंदा हो गया है आदमी ।

एक अनबूझा तराना है यहाँ

ज़िन्दगी का क्या ठिकाना है यहाँ ?
मौत का मीठा बहाना है यहाँ ।

देह मरती, रूह तो मरती नहीं,
फ़लसफ़ा अपना पुराना है यहाँ ।

गा रही है साँस दिल के तार पर,
एक अनबूझा तराना है यहाँ ।

ज़िन्दगी क्या, दो पलों की डाल पर -
धड़कनों का आशियाना है यहाँ ।

रात में सबकी बिदाई तय हुई,
शाम तक का शामियाना है यहाँ ।

मौत के दिन मदद करता या नहीं,
उस ख़ुदा को आजमाना है यहाँ ।

बाँध मुट्ठी आगए थे हम भले,
पर पसारे हाथ जाना है यहाँ ।

दल सभी दलदल हुए हैं

गाँव सब मरुथल हुए हैं, शहर कोलाहल हुए हैं ।
देश मेरे ! प्रश्न तेरे इस तरह से हल हुए हैं ।

कुर्सियों की क्यारियों में कमल खिलते जा रहे हैं,
क्योंकि दिल्ली के किनारे दल सभी दलदल हुए हैं ।

पाँच सालों से बराबर दूर जनता से रहे जो,
इन चुनावों में उन्हीं के चेहरे काबिल हुए हैं ।

मोरबी में जो नहीं पिघले ग़रीबों की दशा से,
मंच पर आकर मगर के अश्रु से विह्वल हुए हैं ।

दिल में जिनके ग़म नहीं है, आँख जिनकी नम नहीं है,
जानते सरगम नहीं, वे शामिले-महफ़िल हुए हैं ।

हमारी मौत की अफ़वाह को सच मान गए !

हुज़ूर ! चाहते कितने, ये अब हम जान गए !
ज़रा-से द्वार पर आए कि चादर तान गए !

हमारी ज़िन्दगी का सच तो अनसुना ही रहा,
हमारी मौत की अफ़वाह को सच मान गए !

तुम्हारे वास्ते दिन का उजाला ठीक नहीं,
अँधेरी रात में ही तुमको सब पहचान गए ।

कहा था – चार दिन के वास्ते आए हैं यहाँ,
हमारे प्राण गए, पर नहीं मेहमान गए ।

तरस गए थे झलक को तुम्हारी कल तक हम,
दिखे हो आज जब मिलने के सब अरमान गए ।

तू चिड़िया है !

पहले गाना गाती है, तू चिड़िया है !
पीछे दाना खाती है, तू चिड़िया है !

खिड़की पर, दरवाजे पर दस्तक देकर
घर के भीतर आती है, तू चिड़िया है !

तिनकों जैसी कोमल-कोमल किरणों से-
सूरज बुनकर लाती है, तू चिड़िया है !

कभी धूल में, कभी ताल में, पोखर में -
धो-धो पंख नहाती है, तू चिड़िया है !

आँखों में काजल, हाथों में मेहँदी बन
सोलह रूप सजाती है, तू चिड़िया है !

और सयानी बिटिया जैसी दो पल में -
देश छोड़ उड़ जाती है, तू चिड़िया है !

भूली - बिसरी यादों के नग़मे गाकर-
बहुत-बहुत तड़पाती है, तू चिड़िया है !

तीली माचिस की

गोरी चाहे काली तीली माचिस की ।
होली और दिवाली तीली माचिस की ।

राजा-रंक सभी के चूल्हे सुलगाती,
है भोजन की थाली तीली माचिस की ।

हरी-भरी बस्ती में आग लगा देती,
माँ-बहनों की गाली तीली माचिस की ।

बर्फ़ीले-सर्दीले थर-थर मौसम में
गरम चाय की प्याली तीली माचिस की ।

जीवन की बगिया के सूने पतझर में
है फूलों की डाली तीली माचिस की ।

यह लकड़ी है, जिसके बल पर घर भर में -
राज करे घरवाली, तीली माचिस की ।

बिना तीलियों के राजा भी बन जाते -
हाली और मवाली, तीली माचिस की ।

लक्ष्मी है या दुर्गा है या चंडी है -
मेरे लिए सवाली तीली माचिस की ।

इसके होने पर ही अच्छे लगते हैं -
शिमला और मनाली तीली माचिस की ।

देह अगर डिबिया है, मनवा तीली है,
लपट प्रेम की लाली, तीली माचिस की ।

पनघट से मरघट तक साथ लगी रहती -
सब तालों की ताली तीली माचिस की ।

अगर हो गई गीली तीली थोड़ी भी,
पूरा जीवन खाली, तीली माचिस की ।

पापी पार उतरते देखे

सूरज की किरणों में मैंने, अगणित रंग बदलते देखे ।
क्षण में शिखर उबलते देखे, क्षण में शिखर पिघलते देखे ।

तट पर मैंने नौकाओं को डगमग-डगमग होते देखा,
किन्तु नदी की धाराओं में माझी सदा सँभलते देखे ।

हंसों ने कुछ योग न साधा, पर बगुले ध्यानी कहलाए,
एक मछरिया गंदी है ,तो सारे ताल बिगड़ते देखे ।

बचपन में भी चिंतन देखा, यौवन में भी संयम देखा,
किन्तु बुढ़ापे में बूढ़े तक शिशु की तरह मचलते देखे ।

वैतरणी में डूब गए हैं कितने ज्ञानी, कितने ध्यानी,
किन्तु अजामिल-गणिका जैसे पापी पार उतरते देखे ।

मेहरबाँ हो गए

रुख से परदा हटा, तो रवाँ हो गए,
सबको ऐसा लगा, मेहरबाँ हो गए ।

शरबती आँख से जाम ऐसा दिया,
आज महफ़िल में हम बेजुबाँ हो गए ।

कुछ हवाएँ ही ऐसी चली इन दिनों,
इस चमन के सभी गुल जवाँ हो गए ।

हम तो समझे -- अकेले हैं आशिक, मगर-
राह में तो कई कारवाँ हो गए ।

दिल के कतरे को उनने उठाया, तभी-
हमको ऐसा लगा रहनुमा हो गए ।

पर उसे पत्थरों पर घिसा जाने क्यों,
हाय, आशिक सभी बदगुमाँ हो गए ।

प्यार की आँधिया क्या चलीं तो चलीं,
धूल थे हम, मगर आसमाँ हो गए ।

आँधियाँ जो थमीं तो ठगे रह गए,
हाय, वीरान सब आशियाँ हो गए ।

बच्चों को दूध दे रही माँ घूस की तरह

महलों में लोग जी रहे जासूस की तरह,
औ' झुग्गियों में आदमी मायूस की तरह ।

जो पाँच साल के लिए संसद में आ गए,
लटके हुए वे झाड़ औ' फानूस की तरह ।

ईमानदारी ख़ून में आएगी कहाँ से ?
बच्चों को दूध दे रही माँ घूस की तरह ।

हमको जगाने आए थे लेकर मशाल जो,
बस्ती जला गए वे घास--फूस की तरह ।

है शीतलहर की तरह इस साल का बजट,
फागुन में कँपकँपी है माघ-पूस की तरह ।

माटी मालव की

काली और कठीली माटी मालव की ।
गीली और गठीली माटी मालव की ।

सीधी-सादी, भोली-भोली सहज-सरल,
दुल्हन-सी शरमीली माटी मालव की ।

चिता भस्म-सी, हल्दी, मेहँदी, कुंकम-सी,
कितनी रंग-रंगीली माटी मालव की ।

राजस्थानी ख़ून गिरा जिस सीमा पर,
वहाँ लाल पथरीली माटी मालव की ।

झूमा करती है अफ़ीम के फूलों में,
मादक और नशीली माटी मालव की ।

जरा छेड़ दो तो अंगार बना करती,
है माचिस की तीली माटी मालव की ।

सिर से कम का सौदा नहीं किया करती,
जिद्दी और हठीली माटी मालव की ।

पल में रोती पल में ख़ुश हो जाती है,
शिशु जैसी सपनीली माटी मालव की ।

डग-डग रोटी, पग-पग नीर दिया करती,
माँ की तरह लचीली माटी मालव की ।

टेसू, महुवा, तेदूँ और करोंदे-सी,
मोहक और रसीली माटी मालव की ।

मेले-ठेले, तीज और त्योहारों में -
चंचल छैल-छबीली माटी मालव की ।

विंध्य, सतपुड़ा, अरावली के चूल्हे पर-
घी से भरी पतीली माटी मालव की ।

चंबल, शिप्रा और नर्मदा के तट पर -
छेड़े तान सुरीली माटी मालव की ।

भोज और विक्रम की शीतल छाया में
कालिदास बन जी ली माटी मालव की ।

महाकाल का शूल गड़ा इस धरती पर,
है धरती की कीली माटी मालव की ।

जब से काटा राजनीति की नागिन ने,
हाय, हुई जहरीली माटी मालव की !

◆◆◆